भीरे को, हड़पलिया और मुंशी ने ताल को हडप लिया। बच्चा और बंशीलाल जैसे लोग लाचार। मे टापते रह जाते हैं। जहाँ गोपी और रामदुलार जमकर तस्करी करते हैं क्योंकि उनके बाबू एम.पी. हैं तो भैया थानेदार। देश, समाज मे चलने वाली ऐसी ही विभूषिकाओं का वर्णन हमें गौतम जी की रचना में मिलता है। वे समाज को राजनीति का यथार्थ रुप दिखाते हैं। यह समाज लोग सभी धन के लालची हैं। सेवा, धर्म, पाप, पुण्य कोई नहीं देखता है। सब सत्ता में अंधे हो जाते हैं -

बूढी काकी की भला, अब किसको परवाह।
थैली आयी हाथ में, मैली हुई निगाह।।(112)

खेत बिका रुक्का लिखे, बाकी रहा दहेज।
तेल छिड़ विट्टो मरी, देख न पायी सेज।।(113)

नहीं रहे वे आचरण, नहीं रहे प्रतिमान।
जिनके आगे प्रेम से झुकता था इंसान्।।

कितना उलटा हो गया, आज कार्य व्यापार।
थाने मे जन्माष्टमी, आश्रम में हथियार।।(114)

बंधे में पानी नहीं, नयी नहर का प्लान।
ठंडे घर में बैठकर, बना रहे श्रीमान्।(115)

सोच रहे सब पैंतरा चलें कौन सी चाल।
भाषा, पानी, ताजिया, या पूजा पंडाल।।(116)

इस प्रकार हम गौतम जी के कृतित्व में उनके व्यक्तित्व के अनुसार ही सीधी-साधी भाषा में बडी से बडी बात निकल आती है। जो उनके साहित्य में सहजता का निर्वाह करती है। गौतम जी के ये दोहे हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि में अपनी भूमिका अवश्य निभाते हैं।

डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय

का नाम आधुनिक दोहाकारों में बडे ही कुशल दोहाकारों में लिया जाता है। श्री पाण्डेय जी आधुनिक दोहा लेखन में श्रेष्ठ भूमिका निभा रहे हैं। उनका अभी हाल ही में प्रकाशित दोहा संग्रह 'बढने दो आकाश' आज के श्रेष्ठ दोहा संग्रहों में गिना जाता है। श्री वेद प्रकाश पाडेय जी का जन्म ग्राम खोरिया जिला गोरखपुर में 29 अक्टूबर सन 1944 में हुआ। श्री पाण्डेय जी बचपन से ही साहित्य के प्रति लगाव रखते रहे हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य में एम.ए. पीएच.डी. तक शिक्षा प्राप्त की और किसान डिग्री कालेज सेवरही पड़रौना में अपनी सेवा प्रदान की।